मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
अ.प्र. राजपत्रित अधिकारी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की-247667 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल : 09760111555

अपने अनुकूल नवरत्न चयन

पौराणिक कथाओं तथा रत्न विषयक प्रकाशित पुस्तकों से सर्वथा अलग रत्न चयन करने की एक पुस्तक 'स्वयं चुनिए अपना भाग्य शाली रत्न' लिखी गयी है। इसमें उपरत्नादि चयन करने की जिनकी विधियॉ दी गयी है। उतनी विधियॉ आज तक कहीं प्रकाशन में नहीं आयी हैं। पारम्परिक रुप से चले आ रहे। नवरत्नों के क्रम के विषय में इस पुस्तक में शोध के रुप में जो दिया है, वैसा भी किसी ने सोचने अथवा व्यवहार में लाने का प्रयास नहीं किया है। प्रस्तुत है उसी पुस्तक के नवरत्न संबधी पाठ का संक्षिपत सार-संक्षेप. . . . ।

नवरत्न जड़ित अंगूठी, पैन्डेन्ट, कानों के टाप्स आदि प्रायः चलन में देखे जा सकते हैं। यह मात्र अलंकरण के लिए धारण किए जा रहे हैं अथवा इनका कोई मूर्त प्रभाव भी मानव शरीर पर पड़ रहा है, यह विचारणीय विषय है। नवरत्नों की अंगूठी हो या फिर अन्य कुछ, उनमें रत्नों को जोड़ने का एक ही निश्चित क्रम है।

नवरत्न जड़वाने का क्रम

पन्ना	हीरा	मोती
पुखराज	माणिक्य	मूंगा
लहसुनिया	नीलम	गोमेद

रत्न जड़वाने का यह निश्चित क्रम कब से चलन में है, इसके पीछे वैज्ञानिक, विवेचनात्मक क्या भाव छिपा है, पूर्णतः स्पष्ट नहीं है। किसी मनीषी ने कभी तो इस क्रम का कुछ-समझ कर चलन किया ही होगा। इस क्रम को बदलने का तदन्तर में किसी ने भी न तो कभी सोचा न ही इस दिशा में कभी कोई प्रयास किया। इस क्रम को ले कर मैंने बहुत छानबीन की। भारतीय वांगमय में विशेष रुप से तंत्र क्षेत्र में तथा पाश्चात्य और सुदूर पूर्व के देशों में यंत्र का अनेक स्थानों पर उल्लेख आता है। अंक विज्ञान के लोह स्तंभ कहे जाने वाले जॉन हेडन ने एक से नौ तक के अंक एक क्रम विशेष में रखकर चमत्कारी वर्ग का अविश्कार किया है। फेंगशुई में रीढ़ की हडडी कहे जाने वाले लो-शु चमत्कारी वर्ग से लेकर पंचदशी (पनरिया) यंत्रों में अंक विज्ञान में चर्चित अनेक जादुई वर्गों में से नवग्रहों के वर्गाकार यंत्रों में खोज कर अंततः में हार गया। मुझे कहीं कोई ऐसा आधार नहीं मिला जिसको लेकर नवरत्न जड़ने का निश्चित क्रम जुड़ा हो।

अनेक बार मैनें प्रयास किया कि क्यों न इस निश्चित क्रम में व्यक्ति विशेष के अनुरुप परिवर्तन किया जाए। परिवर्तन में मुझे कुछ सूत्र हाथ लगे। मेरे प्रयोग लाभदायक भी सिद्ध हुए। पाठक इस विषय को अपने-अपने बुद्धि-विवके से आगे बढ़ाऐं।

यह संभव है कि मेरे मत से कुछ लोग सहमत न हों। परन्तु उन्हें यह तो स्वीकार करना पड़ेगा कि मानव कल्याण के लिए किए जा रहे अनेक क्रम-उपक्रम आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति पर खरे उतरें। इसलिए परिवर्तन तो निरंतर होते रहना चाहिएं नहीं तो उत्थान अथवा प्रगति में ठहराव आ जाएगा। जैसा कि पारंपरिक रुप से चले आ रहे

रत्न विषय में रत्न के चुनाव को लेकर आ गया है। नवरत्नों को व्यक्ति विशेष के अनुरुप 15 के चमत्कारी एवं जादुई वर्ग में तदनुसार जुड़वा कर आप स्वयं नया प्रयोग कर सकते हैं। क्या पता इस परिवर्तन से जीवन में आया ठहराव पुनः गति पकड़ ले।

यंत्र विज्ञान में इस पंच दशी अर्थात पनरिया यंत्र को राजा की संज्ञा दी जाती है। यंत्र की अपनी अलग ही महिमा है। यंत्र में 1 से 9 अंक 9 वर्गाकार कोष्ठों में अंकित होते हैं। ऊपर-नीचे, दांए-बाएं अथवा किसी भी ओर से जोड़ने पर योग फल सदैव 15 ही आता है। इस जादुई वर्ग का विस्तृत विवरण मैनें अपनी पुस्तक 'दूर करें दुर्भाग्य' नामक पुस्तक में दिया है। शिव और शक्ति पंथी इसे नवधा भक्ति का प्रारुप मानते हैं। ब्रह्माण्ड में नवग्रहों का अस्तित्व माना जाता है। योग ब्रह्माण्ड के भी 9 लक्षण मिलते हैं। सनातन धर्मावलम्वी इसे दुर्गा के नवार्थ मंत्र के रुप में अंकित कर इसकी पूजा-अर्चना करते हैं। मुस्लिम समाज में इसमें 9 पीरों के नाम अंकित करने का चलन है। ज्योतिष शास्त्र में 9 ग्रहों को भी इसमें अंकित करने का चलन है। नाथ संप्रदाय वाले इन्हें नवनाथों में के रुप में पूजते हैं। जैन धर्म वाले नवकार यंत्र के रुप में इसकी आराधना करते है। अंक विज्ञान के जनक माने जाने वाले जॉन हेडन ने 15 के यंत्र को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। चीनी वास्तुशास्त्र में 15 के यंत्र को विषय की रीड़ की हड्डी माना है। बा-गुआ, पा-कुआ यंत्रों का मूल आधार यही 15 का यंत्र है। सार यह है कि यह यंत्र अपने प्रभाव के कारण अष्टसिद्धियों और नवनिधियों का पर्याय माना जाता है।

अपनी जन्म अथवा नाम राशि के अनुरुप इस यंत्र में नवरत्न जड़वाकर इस नयी विधि से आप भी लाभ उठा सकते हैं। यंत्र को राशि अथवा तत्वों के अनुसार चार श्रेणियों में बांटा गया है। अपने अनुरुप यंत्र आप पहले चुन लें।

पहली श्रेणी
मेष, सिंह अथवा धनु राशि
अग्नि तत्व

2	**7**	**6**
9	**5**	**1**
4	**3**	**8**

(आतिसी यंत्र)

दूसरी श्रेणी
वृष, कन्या अथवा मकर राशि
पृथ्वी तत्व

2	**9**	**4**
7	**5**	**3**
6	**1**	**8**

(खाकी यंत्र)

तीसरी श्रेणी
मिथुन, तुला अथवा कुंभ राशि
वायु तत्व

8	**1**	**6**
3	**5**	**7**
4	**9**	**2**

(बादी यंत्र)

चौथी श्रेणी
कर्क, वृश्चिक अथवा मीन राशि
जल तत्व

4	**9**	**2**
3	**5**	**7**
8	**1**	**6**

(आबी यंत्र)

उदाहरण के लिए माना आपकी जन्म अथवा नाम राशि कर्क, वृश्चिक अथवा मीन राशि में से कोई एक है। आपके लिए उपरोक्तानुसार जल तत्व का आबी यंत्र निकलता है। आप यदि अपने लिए आबी यंत्र में नव रत्न जड़वा कर प्रयोग करते हैं। यह क्रम आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगा। किसी अंक के स्थान पर कौन सा रत्न जड़वाना है, यह आप समझ लें। अंकों के रत्न चयन करने का आधार यहॉ ज्योतिष तथा अंक शास्त्र को माना गया है।

क्रम	अंक	स्वामी ग्रह	संबन्धित रत्न
1.	1.	शनि (शनि की राशि मकर को एक माना है)	नीलम
2.	2.	शुक्र	हीरा

3.	3.	राहु (राहु की उच्च राशि माना है)	गोमेद
4.	4.	चंद्र	मोती
5.	5.	सूर्य	माणिक्य
6.	6.	बुध	पन्ना
7.	7.	केतु (अंक शास्त्र में 7 का स्वामी चंद्र तथा केतु है)	लहसुनिया
8.	8.	मंगल	मूंगा
9.	9.	गुरु	पुखराज

आबी यंत्र

4	**9**	**2**
3	**5**	**7**
8	**1**	**6**

रत्न जड़वाने का क्रम

मोती	पुखराज	हीरा
गोमेद	माणिक्य	लहसुनिया
मूंगा	नीलम	पन्ना

अंकों के अनुरुप आबी यंत्र में आप रत्न अंगूठी, पैन्डेन्ट आदि के रुप में जड़वा सकते हैं। पैन्डेन्ट आदि का रंग-रुप अपनी इच्छानुसार भी अलंकरण करवाया जा सकता है।

शक्ति को मानने वाले शक्तिसाधक बादी यंत्र में निम्न क्रमानुसार नवरत्न जड़वाकर नवार्ण यंत्र को सिद्ध कर सकते हैं। इस यंत्र का तंत्र ग्रंथों में 'विजय यंत्र' नाम दिया गया है। यथा नाम चतुर्दिश विजय प्राप्त करने के लिए नवरत्न का यह यंत्र, पैन्डेन्ट आदि बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। यंत्र का स्वरुप इस प्रकार होगा।

विजय यंत्र
(बादी यंत्र)

8 **मूंगा** **वि**	**1** **नीलम** **ऐं**	**6** **पन्ना** **डा**
3 **गोमेद** **क्लीं**	**5** **माणिक्य** **मुं**	**7** **लहसुनिया** **यै**
4 **मोती** **चा**	**9** **पुखराज** **च्चे**	**2** **हीरा** **ह्रीं**

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार की प्राप्ति के लिए यदि कर्मरत हैं तो आपके लिए सूर्य ग्रह का पंचदर्शी यंत्र पूर्ण रुप से सक्षम सिद्ध होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के यंत्रादि बनवाकर उनमें यथावत क्रम से नवरत्न जड़वा कर आप ग्रहों के दुष्प्रभाव दूर कर आशातीत फल प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए सूर्य का नवरत्न यंत्र इस प्रकार से बनेगा।

8 मूंगा	1 नीलम	6 पन्ना
3 गोमेद	5 माणिक्य	7 लहसुनिया
4 मोती	9 पुखराज	2 हीरा

मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स

रूड़की 247667 (उ.ख.)

फोन : (01332) 274370

मोः 09760111555

website : www.astrotantra4u.com

E-mail:gopalraju12@yahoo.com